ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 167-169**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भारत नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने वाले कारकों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. प्रो0 इला शाह
2. डॉ0 योगेश मैनाली

1. विभागाध्यक्षा– समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, अल्मोड़ा परिसर, 2. सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, अल्मोड़ा परिसर (उत्तराखण्ड), भारत

Received-18.06.2022, Revised-22.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: yogesh928@gmail.com

सारांशः– *भारत नेपाल के सदियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं। दोनो राष्ट्रों के बीच 1950 की भारत–नेपाल शान्ति और मित्रता सन्धि दोनो देशों के बीच मौजूद आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का आधार रही हैं। नेपाल, भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी राष्ट्र हैं, दोनों देशों के बीच खुली सीमा भारत–नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को दर्शाती हैं। भारत–नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक–भौगोलिक समानताओं को आत्मसात् किये हुए हैं। दोनों देशों के बीच नातेदारी, विवाह, समान धार्मिक विश्वास, समान सांस्कृतिक मूल्य एवं विश्वास तथा परम्पराओं के एक समान होने के कारण दोनों देशों के आपसी घनिष्ठ सम्बन्धों ने एक–दूसरे के साथ "रोटी–बेटी" का रिश्ता कायम किया हैं। भारत–नेपाल के सांस्कृतिक मूल्य, संस्कृति, धार्मिक विश्वास अनेक समानताओं को समेटे हुये हैं। समान सांस्कृतिक मूल्य, दोनो देशों की हिन्दू–बौद्ध संस्कृति, भौगोलिक स्थिति एवं दोनो देशों के सामाजिक–राजनैतिक सम्बन्ध भारत नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– मैत्रीपूर्ण, सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक–भौगोलिक, आर्थिक, सामरिक, रोटी–बेटी।

भौगोलिक सांस्कृतिक तथा धार्मिक एकरूपता भारत–नेपाल दोनों देशों को मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में पिरोये हैं। भारत–नेपाल के मैत्रीपूर्ण दोस्ताना सम्बन्ध विश्व के सामने एक मिसाल हैं। दोनो देशों के बीच खुली सीमा, बिना पासपोर्ट एवं बीजा के एक–दूसरे देश में आवागमन, धार्मिक कर्मकाण्डों एवं विश्वासों में समानता केवल भारत–नेपाल के बीच ही सम्भव हैं। यही नही, नेपाल के नागरिकों का भारतीय सेना में कर्तव्य और निष्ठा के साथ भारत माता की सेवा करना विश्व में एक अनूठी मिसाल हैं। नेपाल, भारत का एक पड़ोसी देश हैं। सदियों से भारत के साथ चले आ रहे सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक सम्बन्धों के कारण भारत की विदेश नीति में भी अपना विशेष महत्व रखता हैं। यही नही भारत एवं नेपाल हिन्दु एवं बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में समान सम्बन्ध साझा करते हैं। भारत–नेपाल आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध सदियों से मधुर रहे हैं। यदा–कदा जब कोई समस्या आती भी है तब भारत–नेपाल समस्याओं को सदैव शान्तिपूर्ण ढंग से, परस्पर वार्ता से सुलझा लेते हैं। इन समस्याओं को सुलझाने में भारत–नेपाल किसी तीसरे पक्ष की मदद नही लेते हैं। भारत अपनी समझ, सूझ–बूझ, शान्ति, सहयोग तथा आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में स्थायित्व एवं मजबूती देने के लिए न सिर्फ नेपाल के साथ बल्कि अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ सक्रिय रूप से सहयोगात्मक कार्यो को आगे बढ़ाने में 'नेवर हुड फर्स्ट' नीति के तहत अपनी भूमिकाओं का निर्वहन बखूबी से कर रहा हैं। यही भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है जो संघर्ष और प्रतिस्पर्धावादी न होकर पूरकतावादी और समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुये पूरे विश्व को 'वसुदैव कुटुम्बकम' के विचार के आधार पर एक परिवार मानती हैं।

शोध पत्र के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत एवं नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने वाले कारकों का विश्लेषण करना शोध पत्र का उद्देश्य हैं।

शोध पद्धति – सामाजिक तथ्यों या वास्तविकताओं के विषय में किसी भी प्रकार के अनुसन्धान कार्य करने के लिये कार्यप्रणाली एक अनिवार्य पहलू हैं। प्रस्तुत शोध पत्र को तैयार करने के लिये द्वैतीयक स्रोतों की सहायता ली गई हैं, साथ ही विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया हैं।

भारत–नेपाल सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– इतिहास में नजर डालें तो हम देखते हैं कि प्राचीन नेपाल अनेक छोटी–छोटी रियासतों में बंटा था। 1768–1769 में इन तमाम रियासतों को एककर एकीकृत नेपाल बनाने का श्रेय पृथ्वीनारायण शाह को जाता हैं। जिन्हें आज आधुनिक नेपाल के पिता के रूप में जाना जाता हैं। 1814–1816 के बीच आंग्ल–नेपाल युद्ध जो ईस्ट–इण्डिया कम्पनी एवं नेपाल के बीच हुआ जिसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जीत हुई थी। इस युद्ध में नेपाल की हार के बाद 1816 में अंग्रेजों ने नेपाल के साथ एक सन्धि की जिसे इतिहास में 'सिगौली की सन्धि' कहा जाता हैं। सिगौली की इस सन्धि ने भारत एवं नेपाल दोनों देशों को एक साथ लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। इस सन्धि के बाद तत्कालीन ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने नेपाल मूल के गोरखाओं को सेना में भर्ती करना शुरू कर दिया। आज भी भारतीय सेना के गोरखा रेजीमेंट में गोरखाओं को पहले वरीयता दी जाती हैं। इस प्रकार अंग्रेजों के द्वारा नेपाल से की गई सिगौली की सन्धि ने भारत–नेपाल आपसी सम्बन्धों को मजबूत करने की शुरूआत ब्रिटिश शासन काल से ही शुरू हो गई थी।

भारत एवं नेपाल दोनों देशों के अंग्रेजों के शासन से मुक्त होने के बाद जुलाई 1950 में भारत नेपाल के बीच

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

ऐतिहासिक शान्ति एवं मैत्रीपूर्ण सन्धि सम्पन्न हुई थी। इस सन्धि ने दोनो देशों के बीच चले आ रहे आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को और अधिक प्रगाढ़ किया। इस सन्धि का मुख्य मकसद भारत–नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने के लिए तीन मुख्य शर्तो पर जोर दिया था। पहली शर्त यदि भारत या नेपाल पर किसी अन्य देश द्वारा आक्रमण किया जाता हैं तब उस स्थिति में भारत एवं नेपाल दोनों देश आपस में मिलकर संयुक्त रूप से आक्रमण करने वाले देष के खिलाफ लड़ेगे। दूसरी शर्त के तहत भारत या नेपाल किसी एक देश पर बाह्य आक्रमण होने की स्थिति में दूसरा देश सहन नही करेगा। तीसरी शर्त नेपाल के लिए युद्ध की साम्रगी की व्यवस्था भारत करेगा। यानि नेपाल भारत से युद्ध साम्रगी खरीदेगा। यदि नेपाल अपने लिए युद्ध साम्रगी किसी अन्य देश से खरीदना चाहता हैं तो उस स्थिति में नेपाल भारत को अपना बड़ा भाई मानते हुये भारत से परामर्श लेगा। इसके अतिरिक्त भारत–नेपाल के बीच आर्थिक एवं वाणिज्यिक सन्धि भी 1950 में सम्पन्न हुई थी। इस सन्धि के तहत भारत द्वारा नेपाल को अनेक आर्थिक एवं वाणिज्यिक सुविधाओं की व्यवस्था प्रदान की गई थी।

भारत नेपाल आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की वर्तमान पृष्ठभूमि– भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति हैं। भारत अपनी सामरिक स्थिति को मजबूत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। भारत हमेशा से अपने पड़ोसी राष्ट्रों को सतत् आर्थिक और तकनीकी सहायता मुहैया कराकर एक बड़े भाई के रूप में अपनी भूमिकाओं एवं कर्तव्यों का निर्वहन बखूबी से करता आ रहा हैं। भारत–नेपाल के बीच आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की गवाही इस बात का प्रमाण देती है कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपनी विदेश यात्राओं की शुरूवात सबसे पहले नेपाल से ही करते है। भारत–नेपाल के बीच इतने घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं, सम्भवतः अन्य किसी दो पड़ोसियों के बीच शायद ही ऐसे हो। हांलाकि इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता हैं कि कभी–कभी परिवार में बड़े एवं छोटे भाई के बीच किसी वैचारिकी को लेकर मनमुटाव हो जाता है, तब उस मनमुटाव को परिवार के अन्दर ही शान्तिपूर्वक सुलझा लिया जाता हैं। यह उदाहरण मिशाल पेश करता है भारत–नेपाल के पारिवारिक मैत्रीपूर्ण रिश्तों का।

भारत–नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने वाले कारक– भारत नेपाल दोनो देशों के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध सदियों से मधुर रहे हैं। भारत अपनी उन्नति तथा विकास के साथ, विकास की ओर अग्रसर पड़ोस की अभिलाषा के लिए सदैव नैतिक आर्दशों पर बल देता हैं और सिद्धान्तों के लिए जीना सिखाता हैं। 21वीं शदी के प्रवेश द्वार पर भारत अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में समायोजन एवं विकास को अपनी विदेश नीति में प्रमुखता से स्थान देता हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत–नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने वाले कारकों के विश्लेषण पर जोर दिया गया हैं। ये कारक भारत–नेपाल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को प्रगाढ़ तथा मजबूती देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं, जिन पर चर्चा करना समीचीन होगा।

सांस्कृतिक कारक– भारत एवं नेपाल की संस्कृति के एक समान होने के कारण यह दोनो देशों के लोगो की एक अमूल्य निधि हैं। यदि संसार की दो समान संस्कृतियों की समानता के सम्बन्ध में तुलना की जाये तो निःसंदेह वह भारत–नेपाल की संस्कृति ही है। इन दोनो देशों की संस्कृति अनेकों समानताओं को लेकर आपस में दोनो देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूत करने में बल देती हैं। भारत–नेपाल के बीच समान सांस्कृतिक मूल्य है, इसके पीछे मुख्य कारण दोनों देश बहुसंख्यक हिन्दु राष्ट्र हैं। इन दोनो देशों की समान संस्कृति के आपस में मिले होने के कारण सांस्कृतिक मूल्य, मानदंड, जनरीति, रीति–रिवाज, परम्परायें तथा धार्मिक विश्वास, दोनो देशों को एक साथ लाते हैं। इसी का नतीजा है, कि भारत–नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, सांझे एंतिहासिक मूल्य, सभ्यता, संस्कृति, दोनों देशों के लोगों के आपसी सम्पर्क को बढ़ाते है। भारत और नेपाल की सांस्कृतिक समानताऐं दोनो देशों के बीच बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए एक मजबूत आधार तो प्रदान करती ही हैं, साथ ही दोनो देशों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव को भी एक आयाम प्रदान करती हैं।

धार्मिक कारक– भारत एवं नेपाल के आपसी सांस्कृतिक जुड़ाव के अतिरिक्त दोनों देशों के धार्मिक सम्बन्ध भी काफी प्राचीन हैं। प्राचीन हिन्दू और बौद्ध संस्कृति दोनो ही देशों में पली–बढ़ी हैं। इन धर्मो के तीर्थ स्थल और पौराणिक कहानियां दोनों देशों के लोगों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों और धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देती हैं। दोनों देशों के बीच रामायण सर्किट भी आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देगा, क्योंकि नेपाल में जनकपुर है तो भारत में सीतागढ़ी। बौद्ध धर्म के माध्यम से भी दोनों देश धार्मिक रूप से एक–दूसरे से जुड़े हैं। भगवान बुद्ध की शिक्षा को दोनों ही देशों में आस्था के साथ स्वीकार किया जाता हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बुद्ध पूर्णिमा पर लुंबिनी यात्रा ने तो दोनो देशों के धार्मिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में चार चांद लगा दिये हैं। भारत–नेपाल के बीच कालापानी सहित लिपुलेख क्षेत्र की सीमाओं को लेकर पैदा हुआ विवाद नक्शे और राजनीतिक रूप से भले ही दिखाई देता हो लेकिन प्रकृति की जीवन्त सीमा पर इसका अस्तित्व ना के बराबर हैं।

भौगोलिक कारक– दुनिया में आमतौर पर दो पड़ोसी देशों के बीच रिश्ते कारोबारी और कूटनीतिक होते हैं। सीमायें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

जुड़ी होती हैं, लेकिन भारत और नेपाल के बीच रिश्ता इन सबसे अलग है। भारत एवं नेपाल ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सम्बन्धों को साझा करते हैं, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह के सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के लिये एवं एक–दूसरे देशो में निर्बाध आवाजाही के लिए दोनों देशों के बीच खुली सीमा हैं। एक दूसरे देश में आवागमन के लिए पासपोर्ट–बीजा की जरूरत नहीं पड़ती हैं। नेपाल के एक पर्वतीय देश होने के कारण इसका भौगोलिक झुकाव भी भारत की ओर हैं। नेपाल की नदियां पर्वतीय क्षेत्रों से निकलकर तराई क्षेत्र से होते हुए भारत में गुजरती हैं। नेपाल की नदियां भारत की सिंचाई व्यवस्था के साथ–साथ भारत नेपाल की संयुक्त जल विद्युत परियोजनाओं में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इस प्रकार कहा जा सकता हैं, कि जहां एक ओर नेपाल भारत के लिए अति महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति वाला देश हैं, वहीं दूसरी ओर नेपाल का भू–बद्ध राष्ट्र होना इन्हें काफी हद तक एक–दूसरे पर निर्भर बनाता हैं।

सामरिक कारक– सामरिक से तात्पर्य हैं सुरक्षा। नेपाल के उत्तरी सीमा में चीन स्थित हैं। नेपाल की उत्तरी सीमा चीन से लगने के कारण नेपाल की सुरक्षा पर भारत की सुरक्षा निर्भर करती हैं। भगवान न करे कि कभी भारत–नेपाल के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कमजोर हुए तब चीन नेपाल के माध्यम से नेपाल की दक्षिणी सीमा में पहुंच जायेगा, जो भारत की उत्तरी सीमा हैं।

आर्थिक कारक– नेपाल के प्रति भारत का प्यार इस बात की बानगी देता हैं कि भारत सरकार प्रतिवर्ष अपने बजट में नेपाल के लिए विशेष प्रोविजन करती हैं। भारत सरकार के अनेकों प्रोजेक्ट नेपाल में चल रहे हैं, जिससे नेपाल की आर्थिक संरचना मजबूत हो सके। भारत के लोगों को नेपाल में तथा नेपाल के लोगों को भारत में किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि को संचालित करने में दोनों देशों द्वारा किसी भी तरह की कोई रोक–टोक नहीं हैं। भारत के अनेक व्यापारी नेपाल में निवेश कर रहे हैं। भारत–नेपाल के बीच अच्छे आर्थिक सम्बन्ध दोनों देशों के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूती देने वाले कारकों के रूप में एक–दूसरे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शा रहे हैं।

निष्कर्ष– नेपाल एवं भारत एक–दूसरे के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक, सामरिक तथा भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारत–नेपाल दोनो देशों के बीच सदियों पुराने रोटी–बेटी के सम्बन्ध होने के कारण दोनों देशों के आपस में सुखद मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं। भारत और नेपाल के बीच लोगों से लोगों के घनिष्ठ, वैवाहिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध एक दूसरे के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूत करते आ रहे हैं और करते रहेंगें। भारत और नेपाल के सम्बन्ध ऐतिहासिक रहे है और यदि छिटपुट मतभेदों को छोड़ दिया जाये तो दोनो देशों के आपसी रिश्ते हमेशा मजबूत रहे हैं। आज आवश्यकता है दोनो देशों के सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सामरिक कारकों को और अधिक मजबूत करने की जिसके लिए दोनों देशों के प्रधानमंत्री प्रतिबद्ध तथा वचनबद्ध हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://hi.m.wikipedia.org, ''भारत–नेपाल सम्बन्ध'' ।
2. https://www.drishtiias.com,''भारत–नेपाल सम्बन्धः वर्तमान परिदृश्य'' ।
3. https://www.icwa.in,''भारत–नेपाल सम्बन्धः प्रगाढ़ता के प्रयास'' ।
4. https://www.jagran.com, "Indo Nepal Friendship: भारत–नेपाल सम्बन्ध सषक्त करने की दिशा बढ़े कदम।
5. https://mea.gov.in, भारत–नेपाल सम्बन्धः नये क्षितिज की ओर ।
6. https://www.amarujala.com,"विश्व में मिशाल है भारत नेपाल के दोस्ताना सम्बन्ध, रिश्ते बिगड़े तो दोनो देशों को होगा नुकसान ।
7. https://www.vivacepanorama.com,"भारत नेपाल सम्बन्ध ।
8. पन्त, डॉ0 पुष्पेश एवं श्रीपाल जैन, ''अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार'' मीनाक्षी प्रकाशन ,मेरठ।
9. फडिया, बी0एल0, ''अन्तराष्ट्रीय राजनीति'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
10. Mainali, Shyam Datt, "National Security and Kumaun- Garhwal" published by Mainali Publications Dwarahat.
11. https://hindi.careerinindia.com, "पी एम मोदी के नेपाल दौरे पर भारत–नेपाल सम्बन्ध, द्विपक्षीय बैठक और समझौते ।
12. https://www.prabhatkhabar.com, "भारत के लिए अहम् है नेपाल ।

*****